

ऋग्वेद

मण्डल १०, अनुवाक ११, सूक्त १५१ ।

अष्टक ८, अध्याय ८, वर्ग ९ ।

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Rigveda

Maṇḍala 10, Anuvaaka 11, Sookta 151.

Aṣṭaka 8, Adhyaaya 8, Varga 9.

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

There are two independent systems in place for classifying the 10522 Mantras from the R̥gveda.

The first system has the Mantras broadly classified in Maṇḍalas. Each Maṇḍala has Anuvaakas which are further divided into Sooktas. However it is noteworthy that the Sooktas are numbered independently within a Maṇḍala and their numbering do not reset at the switchover of Anuvaakas. Due to this, many scholars consider Anuvaaka to be redundant and do not use them in their translations. There are a total of 10 Maṇḍalas, 85 Anuvaakas and 1028 Sooktas in the R̥gveda. The sizes of the Maṇḍalas vary considerably between 429 Mantras to 1976 Mantras. The sizes of the Sooktas vary from 1 Mantra to 58 Mantras.

The second system tries to evenly distribute the Mantras between 8 Aṣṭakas which are further divided into 8 Adhyaayas each. These 64 Adhyaayas are further subdivided into 2024 Vargas. The normal size of a Varga is five Mantras, however, it varies from one to twelve Mantras with either extremes being rare.

Even though the second system does not have the Sookta classification, it honors the sanctity of a Sookta. One Sookta belongs to only one Aṣṭaka and one Adhyaaya. The Mantras from a Sookta may be further grouped into multiple Vargas. The Vargas however, do not mix Mantras from different Sooktas.

Nowadays, Maṇḍala / Anuvaaka / Sookta classification is more popular and has been used in this translation as well. However, the Aṣṭaka / Adhyaaya / Varga is mentioned in the page header for reference, if needed.

सारांश

श्रद्धा सूक्त में ऋषि ईश्वर की वेदवाणी के सत्य होने में श्रद्धा और विश्वास रखने का महत्त्व समझाते हैं। श्रद्धा और दृढ़ निश्चय होने पर कुछ भी असम्भव नहीं। केवल श्रद्धा से ही समाज में सुधार लाया जा सकता है। मनुष्य को प्रतिक्षण श्रद्धापूर्वक वेदों के अनुसार कर्म करते रहना चाहिए।

नौवे वर्ग का आरम्भ होता है।

प्रथम मन्त्र में ऋषि श्रद्धापूर्वक हवन करने का संदेश देते हैं।

कामायनी श्रद्धा ऋषिः । श्रद्धा देवता । ३२ अक्षराणि । आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः । गान्धारः स्वरः ।

श्रद्धयाऽग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः ।

श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि ॥१॥

ऋग् १०:११:१५१:१

श्रद्धया । अग्निः । सम् । इध्यते । श्रद्धया । हूयते । हविः ॥

श्रद्धाम् । भगस्य । मूर्धनि । वचसा । आ । वेदयामसि ॥१॥

अग्निहोत्र के लिए, हवनकुण्ड में (श्रद्धया) श्रद्धापूर्वक (अग्निः) अग्नि (सम्)(इध्यते) जलाई जाती है और (हविः) आहुतियाँ भी (श्रद्धया) श्रद्धापूर्वक उत्तम हव्यपदार्थों की (हूयते) दी जाती हैं। (वचसा) वेद की वाणी से ही हम (आ) अच्छे से (वेदयामसि) जानते हैं कि (श्रद्धाम्) श्रद्धापूर्वक पूर्ण मनोयोग से किए कार्य ही (भगस्य) ऐश्वर्य के (मूर्धनि) शिखर पर पहुँचाते हैं। अग्निहोत्र से कोई प्रत्यक्ष लाभ हमें दिखाई नहीं देता, और हममें से कुछ को तो यज्ञ में धुएँ से वातावरण दूषित होता और हव्य पदार्थों की बर्बादी ही होती दिखाई देती है। यह वेदों में श्रद्धा ही है जिससे हम पर्यावरण के हित में यज्ञ के महत्त्व को समझ उसे करते हैं।

दूसरे मन्त्र में ऋषि श्रद्धापूर्वक दानादि कर्म करने वालों के कल्याण की प्रार्थना करते हैं।

कामायनी श्रद्धा ऋषिः । श्रद्धा देवता । ३० अक्षराणि । विराडार्ष्यनुष्टुप् छन्दः । गान्धारः स्वरः ।

प्रियं श्रद्धे ददतः प्रियं श्रद्धे दिदासतः ।

प्रियं भोजेषु यज्वस्विदं मे उदितं कृधि ॥२॥

ऋग् १०:११:१५१:२

प्रियम् । श्रद्धे । ददतः । प्रियम् । श्रद्धे । दिदासतः ॥

प्रियम् । भोजेषु । यज्वऽसु । इदम् । मे । उदितम् । कृधि ॥२॥

Synopsis

In the “*Shradhaa sookta*” the sage is highlighting the benefits of having a steadfast faith in the Vedic wisdom. Nothing is impossible for a person with faith and a strong resolve. Positive changes can be attained in the society only with faith and devotion. A human should consistently and with faith perform actions as detailed in the Vedas.

Here begins the ninth Varga.

In the first mantra the sage preaches about the importance of faith and devotion while performing *yajña*.

ṛiṣhiḥ kaamaayanee shraddhaa, **devataa** shraddhaa, **vowels** 32, **chhandah** aarṣhy anuṣṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

1. shraddhayaa’gniḥ samidhyate shraddhayaa hooyate haviḥ,

shraddhaam bhagasya moordhani vachasaa vedayaamasi. Rig 10:11:151:1

shraddhayaa agniḥ sam idhyate shraddhayaa hooyate haviḥ,

shraddhaam bhagasya moordhani vachasaa aa vedayaamasi.

For the ***agnihotra***, (*agniḥ*) the fire (*sam*)(*idhyate*) is ignited into the ***kuṇḍa*** (*shraddhayaa*) with faith and devotion, (*haviḥ*) the offerings of the choicest things (*hooyate*) are made (*shraddhayaa*) with faith and devotion as well. (*vachasaa*) From the Vedic wisdom we (*aa*) very well (*vedayaamasi*) understand that only the deeds performed (*shraddhaam*) with unshakable faith and devotion help us reach (*moordhani*) the peaks (*bhagasya*) of achievement and abundance. There are no immediately visible benefits of the ***agnihotra***. Some even feel that the smoke from the fire causes pollution and the material offered on fire is just wasted. However, it is the faith in the words of the Vedas that helps us understand the benefits that the *yajña* brings to the environment and to the living beings.

In the second mantra the sage offers a prayer for the wellbeing of the people engaged in charitable acts.

ṛiṣhiḥ kaamaayanee shraddhaa, **devataa** shraddhaa, **vowels** 30, **chhandah** viraaḍ aarṣhy anuṣṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

2. priyañ shraddhe dadataḥ priyañ shraddhe didaasataḥ,

priyam bhojeṣhu yajvasvidam ma uditañ kṛidhi.

Rig 10:11:151:2

priyam shraddhe dadataḥ priyam shraddhe didaasataḥ,

priyam bhojeṣhu yajva-su idam me uditam kṛidhi.

(श्रद्धे) हे आस्था! (ददतः) दान देने वाले का (प्रियम्) भला हो । (श्रद्धे) हे आस्था! (दिदासतः) दान देने की इच्छा करने वाले का (प्रियम्) भला हो । (भोजेषु) अतिथियों को भोजन कराने वाले और (यज्वऽसु) यज्ञ को करने कराने वाले, सभी जनों का (प्रियम्) भला हो । (मे) मेरी (इदम्) इस याचना को स्वीकार कर मेरा (उदितम्) उत्थान (कृधि) कीजिये ।

तीसरे मन्त्र में ऋषि समाज के सुधार में श्रद्धा का महत्त्व दर्शाते हैं ।

कामायनी श्रद्धा ऋषिः । श्रद्धा देवता । ३१ अक्षराणि । निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः । गान्धारः स्वरः ।

यथा देवा असुरेषु श्रद्धामुग्रेषु चक्रिरे ।

एवं भोजेषु यज्वस्वस्माकमुदितं कृधि ॥३॥

ऋग् १०:११:१५१:३

यथा । देवाः । असुरेषु । श्रद्धाम् । उग्रेषु । चक्रिरे ॥

एवम् । भोजेषु । यज्वऽसु । अस्माकम् । उदितम् । कृधि ॥३॥

(यथा) जैसे (देवाः) विद्वान्, (उग्रेषु) उग्र (असुरेषु) आसुरी वृत्तियों वालों को (श्रद्धाम्) श्रद्धा व विश्वास के साथ उपदेश दे, बिना हिम्मत हारे उनकी वृत्तियों का शमन (चक्रिरे) कराते हैं (एवम्) वैसे ही (भोजेषु) अतिथियों को भोजन कराने वाले और (यज्वऽसु) यज्ञ करने वाले कभी भी इन कर्मों से पीछे न हटें । हमारी इस भावना को सत्य कर (अस्माकम्) हमारा (उदितम्) उत्थान (कृधि) कीजिए ।

चौथे मन्त्र में ऋषि कहते हैं कि केवल दृढ़ निश्चय वाले ही श्रद्धा का सहारा ले सकते हैं ।

कामायनी श्रद्धा ऋषिः । श्रद्धा देवता । ३२ अक्षराणि । आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः । गान्धारः स्वरः ।

श्रद्धां देवा यजमाना वायुगोपा उपासते ।

श्रद्धां हृदय्य१ ्याकूत्या श्रद्धया विन्दते वसु ॥४॥

ऋग् १०:११:१५१:४

श्रद्धाम् । देवाः । यजमानाः । वायुगोपाः । उप । आसते ॥

श्रद्धाम् । हृदय्यया । आऽकूत्या । श्रद्धया । विन्दते । वसु ॥४॥

(देवाः) विद्वान्, (यजमानाः) यज्ञशील और (वायुगोपाः) प्राणायाम करने वाले व्यक्ति (श्रद्धाम्) श्रद्धा को सदा अपने (उप)(आसते) निकट रखते हैं । (हृदय्यया) हृदय में (आऽकूत्या) दृढ़ सङ्कल्प वाला मनुष्य ही (श्रद्धाम्) श्रद्धा को रख सकता है और (श्रद्धया) श्रद्धा से ही सब प्रकार के (वसु) उत्तम धन (विन्दते) प्राप्त किए जा सकते हैं ।

(*shraddhe*) **O Faith! May (*dadataḥ*) the donors (*priyam*) be blessed! (*shraddhe*) O Faith! May the ones who are (*didaasataḥ*) desirous of donating (*priyam*) be blessed! May (*bhojeshu*) the ones offering food to the guests and (*yajva-su*) ones performing *yajña* (*priyam*) be blessed as well! Please accept (*idam*) this request (*me*) of mine and (*uditam*)(*kṛidhi*) elevate myself.**

In the third mantra the sage highlights the importance of faith and devotion for those engaged in the upliftment of the society.

ṛiṣhiḥ kaamaayanee shraddhaa, **devataa** shraddhaa, **vowels 31, chhandah** nichṛid aarṣhy anuṣṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

**3. yathaa devaa asureṣhu shraddhaamugreṣhu chakrire,
evam bhojeshu yajvasvasmaakamuditāṅ kṛidhi.**

Rig 10:11:151:3

yathaa devaaḥ asureṣhu shraddhaam ugreṣhu chakrire,
evam bhojeshu yajva-su asmaakam uditam kṛidhi.

(*yathaa*) **As (*devaaḥ*) the scholars (*shraddhaam*) steadfast with faith and devotion (*chakrire*) inspire and preach the ones (*ugreṣhu*) with dominant (*asureṣhu*) evil tendencies and help them get rid of these tendencies, (*evam*) so should (*bhojeshu*) the ones offering food to the guests and (*yajva-su*) the ones performing *yajña* remain undeterred towards these performances. Please accept this request and (*uditam*)(*kṛidhi*) elevate (*asmaakam*) us.**

In the fourth mantra the sage declares that only the ones with a strong resolve can have faith.

ṛiṣhiḥ kaamaayanee shraddhaa, **devataa** shraddhaa, **vowels 32, chhandah** aarṣhy anuṣṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

**4. shraddhaan devaa yajamaanaa vaayugopaa upaasate,
shraddhaan hṛidayya1yaakootyaa shraddhayaa vindate vasu.**

Rig 10:11:151:4

shraddhaam devaaḥ yajamaanaaḥ vaayu-gopaaḥ upa aasate,
shraddhaam hṛidayyayaa aa-kootyaa shraddhayaa vindate vasu.

(*devaaḥ*) **Scholars, (*yajamaanaaḥ*) performers of *yajña* and (*vaayu*)(*gopaaḥ*) practitioners of *yoga* and breath control, all of them keep (*shraddhaam*) faith and devotion (*upa*)(*aasate*) close to their heart. Only someone (*aa*)(*kootyaa*) with a strong resolve (*hṛidayyayaa*) in one's heart can stay steadfast (*shraddhaam*) in faith and devotion. (*shraddhayaa*) With faith and devotion one (*vindate*) can get (*vasu*) all kinds of benevolent wealths.**

पाँचवे मन्त्र में ऋषि जीवन के हर पड़ाव पर श्रद्धा का महत्त्व समझाते हैं ।

कामायनी श्रद्धा ऋषिः । श्रद्धा देवता । ३२ अक्षराणि । आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः । गान्धारः स्वरः ।

श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यन्दिनं परि ।

श्रद्धां सूर्यस्य निष्प्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः ॥५॥

ऋग् १०:११:१५१:५

श्रद्धाम् । प्रातः । हवामहे । श्रद्धाम् । मध्यन्दिनम् । परि ॥

श्रद्धाम् । सूर्यस्य । निष्प्रुचि । श्रद्धे । श्रत् । धापय । इह । नः ॥५॥

(श्रद्धाम्) श्रद्धा को हम (प्रातः) प्रातःकाल अथवा जीवन के आरम्भ में (हवामहे) पुकारते हैं । (श्रद्धाम्) श्रद्धा को हम (मध्यन्दिनम्) दिन के मध्य अथवा जीवन के मध्यकाल में भी (परि) चारों ओर से पुकारते हैं । और (सूर्यस्य) सूर्य के (निष्प्रुचि) अस्त होने के समय अथवा आयु के अन्त में भी हम (श्रद्धाम्) श्रद्धा को पुकारते हैं । (श्रद्धे) हे आस्था! (इह) इस जीवन में (नः) हमें (श्रत्) वेदों के सत्य वचन में (धापय) विश्वास करने वाला बना ।

नौवा वर्ग समाप्त हुआ ।

Rigveda - Maṇḍala 10 Anuvaaka 11 Sookta 151; Aṣṭaka 8 Adhyaaya 8 Varga 9

In the fifth mantra the sage highlights the importance of faith at each and every stage of our lives.

riṣhiḥ kaamaayanee shraddhaa, **devataa** shraddhaa, **vowels** 32, **chhandah** aarṣhy anuṣṭup, **svarah** gaandhaarah.

**5. shraddhaam praatarhavaamahe shraddhaam madhyandinam pari,
shraddhaan sooryasya nimruchi shraddhe shraddhaapayeha naḥ.**

Rig 10:11:151:5

shraddhaam praataḥ havaamahe shraddhaam madhyandinam pari,
shraddhaam sooryasya ni-mruchi shraddhe shrat dhaapaya iha naḥ.

We (*havaamahe*) **call upon** (*shraddhaam*) **faith and devotion** (*praataḥ*) **in the morning or in the early periods of our lives. We call upon** (*shraddhaam*) **faith and devotion** (*pari*) **from all directions** (*madhyandinam*) **during the middle of the day or our midlife. We call upon** (*shraddhaam*) **faith and devotion** (*ni*)(*mruchi*) **at the time of the setting** (*sooryasya*) **of the sun or towards the end of our life. (shraddhe) O Faith!** (*iha*) **In this life please make** (*naḥ*) **us** (*dhaapaya*) **a strong believer** (*shrat*) **in the truth of the Vedic wisdom.**

Here ends the ninth Varga.